हमारा स्वाभिमान – राष्ट्रभाषा हिन्दी

प्यारे देशवासियों आओ, मिलकर गाएं हम गुणगान,
राष्ट्रभाषा है हिन्दी हमारी और हमारा स्वाभिमान।

ऋषि मुनियों की पावन भूमि, संस्कृत का उद्‌गम स्रोत यहां,
देवनागरी लिपि है जिसकी, हिन्दी जैसा जोश कहां।

देवों के मुख की वाणी जो करती नित नूतन प्रयास,
प्यार, प्रेम का पाठ पढ़ाती, हर प्राणी मात्र की आस।

अंग्रेजी के पिछलग्गू होकर क्यों करते हम नित बकवास,
जो अभी बुझा नहीं पाई किसी बुद्धिजीवी की प्यास।

भारत मां के अमर सपूतों, मातृभाषा का करो सम्मान,
राष्ट्रभाषा है हिन्दी हमारी और हमारा स्वाभिमान

मत भूलो स्वतंत्रता संग्राम व मातृभूमि के वीरों को,
जिनके कारण स्वतंत्र है भारत, भगतसिंह से हीरों को।

देश की आजादी की खातिर संस्कृत में हुआ उद्‌घोष,
वंदे मातरम् बोले बंकिम बाबू और बोले रासबिहारी बोस।

हिन्दी जननी है प्रेम भाव की प्यारे भारत की यह शान,
राष्ट्रभाषा है हिन्दी हमारी और हमारा स्वाभिमान।

चीन, जापान और अमेरिका अपनी भाषा बोल रहे,
फिर क्यों हम अपनी भाषा को, तराजू पर यों तोल रहे।

सौतेली अंग्रेजी के आंचल में कभी सुख चैन नहीं आएगा,
प्यार, सुकून और शान्ति स्वमाता हिन्दी में ही पाएगा।

हो शुरूआत आज–अभी से सौ प्रतिशत हिन्दी अभियान,
राष्ट्रभाषा है हिन्दी हमारी और हमारा स्वाभिमान।

कमांडर विजयकृष्ण कौशिक
जे डोडी (निदेशक डॉकयार्ड)

संघर्ष का उद्‌गार

वीरों की वीरकथाएं हमें प्रेरणा देती हैं
आजाद के इस हिंद को उज्ज्वल अखण्ड करती हैं
यदि न करता संघर्ष चन्द्रशेखर आजाद
यदि न करता संघर्ष वीर सावरकर
यदि न करते संघर्ष वीर जवान
तो नहीं होता देश आजाद

रणभूमि भयानक होती है
पर इसमें लड़ना पड़ता है
आकांक्षा की खातिर
उसमें मर मिटना पड़ता है
नीचे तबके के लोगों से भी भिड़ना पड़ता है
रणभूमि भयानक होती है
पर उसमें डटना पड़ता है

इतिहास अगर दोहराएं तो संघर्ष की गाथा नजर आती है
राम के यश का गुणगान नजर आता है
अर्जुन का उपदेश नजर आता है
आदिकाल से ही संघर्ष के अस्तित्व का सम्मान नजर आता है
राणाप्रताप के घोड़े का अभिमान नजर आता है
करगिल में शहीद वीरों के लहू का तापमान नजर आता है
भारत मां की धरती पर, भारत मां के लिए मर मिटने में
स्वाभिमान नजर आता है।

संघर्ष एक ऐसा आईना है
जिसमें अखण्ड अभेद्‌य नजर आता है
जीवन के रूप हैं अनेक
संघर्ष उनमें सबसे नेक

जीवन को अगर है आजमाना तो
संघर्ष की शरण में है जाना
संघर्ष से कभी नहीं नादानी
जीने के लिए यह भी है जैसे पानी
जन–जन को है मेरा यही उपदेश
संर्घष का करें रोम–रोम में समावेश
जय हिन्द! जय भारत!

जय प्रकाश सिंह

इंस्टिक्रप्ट कुंजी पटल को अनन्य मान्यता : एक ऐतिहासिक कदम

केन्द्र सरकार एवं उनके अधीनस्थ/संबंद्ध कार्यालयों एवं उपक्रमों में कम्प्यूटरों पर हिन्दी में कार्य करने से संबंधित, गृह सचिव द्वारा जारी किया गया पत्र सं. 2015/13/2011 रा भा (तक) 27 फरवरी 2012 का पत्र सरकारी/गैर सरकारी काम काज में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को द्रुत गति देने की दिशा में एक अभूतपूर्व ऐतिहासिक कदम है। उक्त पत्र से रोजमर्रा के कामकाज में हिन्दी के प्रयोग में आने वाली कई ऊहापोह पैदा करने वाली स्थितियों का निर्णायक रूप से निराकरण हुआ है। कम्प्यूटरों पर हिन्दी के मानक कुंजी पटल को लेकर काफी वर्षों से ऊहापोह की स्थिति रही है। मानक कुंजी पटल के बारे में सरकारी विनिश्चय की कमी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बुनियादी कमी के रूप में खलती रही है, जिसके चलते राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय कंपनियां भी देवनागरी लिपि वाले द्विभाषी कुंजीपटलों का बड़े पैमाने पर उत्पादन करने में हिचकिचाती रही हैं। उक्त पत्र के माध्यम से जारी निर्देश द्वारा इंस्टिक्रप्ट ले आउट वाले कुंजीपटल की अनन्य मान्यता स्पष्ट कर दी गई है।

वर्तमान में कम्प्यूटरों पर हिन्दी में काम करने के लिए तीन कुंजी पटल विकल्प के रूप में उपलब्ध हैं। रैमिंग्टन, इंस्टिक्रप्ट तथा फोनेटिक तुलनात्मक दृष्टि से इंस्टिक्रप्ट में टंकण सीखना काफी आसान है। इंस्टिक्रप्ट कुंजीपटल की एक विशेषता यह भी है कि इसके द्वारा अन्य भारतीय भाषाओं में भी आसानी से टंकण कर सकते हैं।

गृह सचिव के उक्त पत्र के निम्नांकित दो प्रावधानों (पैरा 5 तथा 6) से इंस्क्रिस्ट कुंजी पटल के प्रयोग को अनन्य रूप से विनिश्चित कर दिया गया है:

(क) सभी कम्प्यूटरों के साथ केवल द्विभाषी कीबोर्ड की ही खरीद की जाए, जिसमें इंस्टिक्रप्ट की बोर्ड लेआउट (अभिन्यास) अवश्य हो।

(ख) 1 अगस्त, 2012 से सभी नई भर्तियों के लिए टाइपिंग परीक्षा इंस्टिक्रप्ट की बोर्ड पर लेना अनिवार्य हो। सभी प्रशिक्षण संस्थाएं हिन्दी टाइपिंग का प्रशिक्षण केवल इंस्टिक्रप्ट कुंजी पटल पर ही दें।

आशा ही नहीं, अपितु विश्वास है कि उक्त विनिश्चय से सरकारी काम–काज में हिन्दी टंकण से संबंधित ऊहापोह में डालने वाली, अतंतोगत्वा निराशा पैदा करने वाली स्थितियों से मुक्ति मिलेगी। इससे राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय कम्पनियां भी बड़े पैमाने पर इंस्टिक्रप्ट ले आउट वाले द्विभाषी कीबोर्डों के उत्पादन करने के लिए उत्साहित होगी। इसका एक और लाभ यह भी होगा कि राजभाषा हिन्दी ही नहीं, बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं में भी कम्प्यूटरों पर टंकण की सुविधा का लाभ मिल सकेगा।

नरेन्द्र देव आर्य
संपादक (रूसी/अंग्रेजी)

भारत सरकार की राजभाषा नीति का व्यावहारिक रूप

भूमिका

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। जब से मानव में सोचने व समझने की शक्ति पैदा हुई तभी से यह माध्यम अपनाया जाता रहा है। भाषा के कई रूप हो सकते हैं जैसे– लिखित रूप, मौखिक रूप और सांकेतिक रूप। सांकेतिक भाषा जिसमें किसी अक्षर या लिपि का प्रयोग नहीं होता है, कुछ संकेतों के माध्यम से ही एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की बात को समझ जाता है। उदाहरण के लिए जब बच्चा रोता है तो मां तत्काल समझ जाती है कि बच्चे को उसकी जरूरत है। ऐसे ही बहुत सारे उदाहरण दिये जा सकते हैं। इससे पहले कि हम सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के बारे में बात करें, हमें इससे पहले की परिस्थितियों और हिन्दी की विकास यात्रा के बारे में विचार करना जरूरी होगा। हर देश की अपनी भाषा, धर्म–संस्कृति तथा रीति–रिवाज होते हैं। उनके अनुसार ही शब्दों और भाषा का गठन होता है। भारत एक विशाल देश होते हुए भी सदियों से किसी न किसी हमलावर का शिकार रहा है और विदेशी आक्रमणकारियों ने अपनी संस्कृति, धर्म और रीति–रिवाजों को भारतीयों से बलपूर्वक स्वीकार करवाया। इतिहास इस बात का साक्षी है कि भारत के मूल निवासी दरअसल अपनी सोच, रीति–रिवाज और लोक संस्कृति ही भूल गए और वह सब अपनाये जाने को बाध्य हुए जो शासन सत्ता पर काबिज विदेशियों ने कहा। यहां मुसलमानों ने अपनी शासन सत्ता के दौरान इस्लाम धर्म का खूब प्रचार–प्रसार करवाया और इस्लामिक संस्कृति और परम्पराएं लागू की। उन्हीं के अनुरूप उर्दू भाषा को न केवल आम जनता के बीच बल्कि सरकारी कामकाज में भी उर्दू का भरपूर प्रयोग किया गया। आज भी कोर्ट–कचहरियों में सरकारी कामकाज की भाषा उर्दूनिष्ठ शैली में होती है जिसमें हिन्दी के बहुत कम शब्दों का इस्तेमाल होता है।

जब भारत देश ब्रिटिश सरकार का उपनिवेश बना तो उन्होंने भी अपनी शक्ति के बल पर अंग्रेजी भाषा का प्रचार–प्रसार किया तथा सरकारी कामकाज की भाषा अंग्रेजी को बनाया जिसके लिए उन्होंने साम, दाम, दण्ड, भेद की नीति अपनाई और अपना वर्चस्व कायम रखा। यह सर्वविदित है कि अंग्रेज बहुत अधिक संख्या में भारत नहीं आए थे। अपनी जनशक्ति को उन्होंने भारत में "फूट डालो और शासन करो की नीति" अपनाकर बढ़ाया था। अपना सरकारी कामकाज करने के लिए भारत के ही कुछ अच्छे संभ्रांत परिवार के लोगों के लिए या जो लोग उनके संपर्क में थे, उनके बच्चों के लिए अंग्रेजी शिक्षा का प्रबंध किया। उसके पीछे भी उनकी मानसिक सोच यह थी कि उनसे क्लर्क का काम करवाना है। कार्यालय का अफसर तो अंग्रेज ही होगा। हो सकता है कि पाठकगण मेरी बात से सहमत न हों लेकिन इतिहास ऐसा ही संकेत देता है। लॉर्ड मैकाले ने अपनी भाषा के वर्चस्व को कायम रखने के लिए शिक्षा नीति तैयार की और उसका खूब प्रचार–प्रसार किया। मिशनरी तथा स्कूल तथा कॉलेज खोले गए जिनमें अंग्रेजी में शिक्षा के साथ–साथ ईसाई धर्म का भी प्रचार–प्रसार किया गया।

जब भारत देश आजाद हुआ तो इसके सामने अनेक समस्याएं थीं। इनमें एक समस्या सरकारी कामकाज की भाषा की भी थी, क्योंकि उस समय सरकारी कामकाज अंग्रेजी भाषा में ही किया जाता

था। प्रश्न यह था कि आजाद देश की अपनी भी तो कोई भाषा हो जिसमें हम सरकारी कार्य कर सकें। यह प्रश्न कोई आसान नहीं था। यह बहुत जटिल प्रश्न था क्योंकि भारत छोटे–छोटे प्रांतों में विभाजित था और मुश्किल यह थी कि हर प्रांत की अपनी अलग भाषा थी। इस प्रश्न पर सभी प्रांतों के प्रतिनिधियों की राय अलग–अलग थी जिन्हें राजभाषा हिन्दी के नाम पर एकता के सूत्र में बांधना मुश्किल हो रहा था।

संवैधानिक स्थिति

सन् 1949 में जब भारत के संविधान को अंतिम रूप दिया जा रहा था तो अन्य बातों के साथ–साथ राजभाषा के मामले पर अनेक बार संगोष्ठी हुई कि किस भाषा को सरकारी कामकाज की भाषा बनाई जाए और काफी विचार विमर्श के बाद संविधान के अनुच्छेद 343(1) में हिन्दी भाषा को संघ की राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ जिसकी लिपि देवनागरी होगी और उसके अंकों का स्वरूप अंतर्राष्ट्रीय होगा। उसकी वजह साफ थी कि देश के अधिकांश भाग में बोली और समझी जाने वाली भाषा हिन्दी ही थी। अन्य भाषाएं अपने–अपने प्रान्तों तक ही सीमित थीं। राजभाषा हिन्दी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए राजभाषा अधिनियम 1963 बनाया गया और यह व्यवस्था की गई कि भारतीय संघ की राजभाषा हिन्दी होगी और अंग्रेजी सहभाषा के रूप में प्रयोग की जाती रहेगी जिसके लिए समय–सीमा निर्धारित नहीं की गई। भारत की सभी भाषाएं समान रूप से राष्ट्रभाषाओं के रूप में मान्य हैं।

अनुच्छेद 343(3) के अनुसार तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू के आश्वासन के अनुसार राजभाषा अधिनियम 1963 बनाया गया जिसके अनुरूप हिन्दी संघ की राजभाषा और अंग्रेजी सहभाषा के रूप में प्रयोग में लाई गई। इसी व्यवस्था के चलते अंग्रेजी का स्थान ज्यों–का–त्यों बना रहा और राजभाषा हिन्दी अपना स्थान पाने के लिए संघर्ष करती नजर आ रही है। राजभाषा हिन्दी के सफल कार्यान्वयन के लिए विभिन्न स्तरों पर हिन्दी सलाहकार समितियों और राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया जो हर वार्षिक, अर्धवार्षिक तथा हर तिमाही पर बैठकें आयोजित करती हैं और राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की स्थिति का जायजा लेती हैं। हिन्दी के प्रगामी प्रयोग का मार्ग प्रशस्त करने के लिए निर्णय और उन पर अनुवर्ती कार्रवाई सुनिश्चित कराती हैं।

आम धारणाएं

प्रायः आम जनमानस की सोच यह है कि राजभाषा का कार्य जब अंग्रेजी में चल रहा है तो हिन्दी के लिए इतने सारे प्रयास क्यों किए जा रहे हैं। हमारा मानना है कि हर देश की अपनी राजभाषा है और उन्हें अपनी भाषा पर गर्व है तो भारतीयों को अपनी भाषा पर गर्व क्यों नहीं? आजादी के 65 साल बाद भी, हम अपनी भाषा को वह स्थान नहीं दिला पाए जो उसे मिलना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने कहा था "जिस देश की भाषा नहीं हो वह देश गूंगा है"। मैं किसी भी भाषा का विरोधी नहीं हूं क्योंकि भाषा तो अभिव्यक्ति का माध्यम है। वह माध्यम हिन्दी भी तो हो सकती है। जहां तक शब्दावली की बात है तो हिन्दी भाषा में सभी भाषाओं के शब्दों को सहेज कर रखने और उन्हें आत्म–सात करने की क्षमता है। लोग यह कहते है कि आज अंग्रेजी का युग है और टेक्नोलाजी का जमाना है हिन्दी में वह सामर्थ्य कहां जो अंग्रेजी का स्थान ले सके। यह किसी हद तक ठीक हो

लेकिन यह बात पूरी तरह ठीक नहीं है। मैं उन्हें जानकारी देना चाहूंगा कि डिस्कवरी चैनल पर तकनीकी युक्त एपीसोड भी बड़ी सरल हिन्दी भाषा में प्रस्तुत किए जाते हैं। राजभाषा हिन्दी के मामले में सिर्फ इच्छा शक्ति की कमी महसूस की जा रही है या फिर हमारी मानसिकता ही ऐसी हो चुकी है। यह भी सच है कि इसके लिए राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक कारण भी किसी हद तक जिम्मेदार हैं।

विभागाध्यक्ष/हिन्दी अधिकारी के दायित्व

प्रत्येक सरकारी विभाग में एक अनुभाग हिन्दी का भी होता है जिसमें प्रायः एक हिन्दी अधिकारी और एक या दो हिन्दी अनुवादक और एक हिन्दी टाइपिस्ट होता है। यह नफरी हर विभाग की अनुसचिवीय कर्मचारियों की संख्या के अनुपात पर निर्भर करती है। अब हिन्दी अनुवादक या हिन्दी अधिकारी से यह अपेक्षा की जाए कि वह पूरे विभाग का कार्य हिन्दी में करें तो यह नामुमकिन है। यह उस विभाग/निदेशालय/कार्यालय के मुखिया का संवैधानिक उत्तरदायित्व है कि अपने कार्यालय का प्रशासनिक कार्य यथासंभव राजभाषा हिन्दी में करवाएं और हिन्दी में कार्य करने के लिए अपने अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रेरित करें। हिन्दी अधिकारी/हिन्दी अनुवादक का कर्तव्य हिन्दी अनुवाद का कार्य करने के साथ–साथ अपने उच्च अधिकारियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति से अवगत कराने और उस पर अमल करवाने का है। प्रायः यह समझा जाता है कि हिन्दी अधिकारी/हिन्दी अनुवादकों के पास करने को कुछ होता नहीं है इसलिए उनकी इस मानसिक सोच में बदलाव लाने के उद्देश्य से मैं यहां हिन्दी अधिकारी के उत्तरदायित्वों से अनभिज्ञ पाठकों को थोड़ा अवगत कराना जरूरी समझता हूं, जो इस प्रकार हैं:

(क) विभाग/निदेशालय/कार्यालय से प्राप्त अंग्रेजी की पाठ्य सामग्री को हिन्दी में अनुवाद करना, पुनरीक्षण करना और टाइप करवाकर संबंधित कार्यालयों को भेजना।

(ख) राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के दिशा निर्देशानुसार हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने व प्रचार–प्रसार के लिए विभिन्न स्तरों पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकें आयोजित करना और बैठकों में लिए गए निर्णयों पर अनुवर्ती कार्रवाई सुनिश्चित करना।

(ग) जिन कार्मिकों को हिन्दी का ज्ञान नहीं है उन्हें हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत हिन्दी आशुलिपि/हिन्दी टंकण प्रशिक्षण दिलवाना।

(घ) हिन्दी के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देने के लिए हर वर्ष हिन्दी पखवाड़े का आयोजन करना। इस दौरान विभिन्न प्रकार की गतिविधियां, प्रतियोगिताएं आयोजित करना और इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पखवाड़ा समापन समारोह अथवा किसी अन्य कार्य दिवस में पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित करके पुरस्कृत करना।

(च) राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने और कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति रूझान पैदा करने के लिए हर तिमाही में हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन करना।

(छ) विभागों/निदेशालयों/कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की स्थिति का जायजा

लेने के उद्देश्य से संसदीय राजभाषा समिति द्वारा कार्यालयों का निरीक्षण किए जाने पर समन्वय का कार्य करना और निरीक्षण के दौरान दिए गए आश्वासनों को पूरा करवाना।

(ज) यदि हिन्दी अधिकारी मुख्यालय स्तर के कार्यालय में कार्यरत हैं और जब भी गृह मंत्रालय और संबंधित विभाग द्वारा किसी अधीनस्थ कार्यालय का संयुक्त राजभाषायी निरीक्षण किया जाता है, तो उस समय उसे एक प्रतिनिधि के रूप में भूमिका निभानी होती है और वह समन्वय कार्य भी करता है।

(झ) मुख्यालय स्तर से हिन्दी अधिकारी अपने अधीनस्थ/कार्यालयों का राजभाषायी निरीक्षण करता है और निरीक्षण संबंधी की रिपोर्ट तैयार करके संबंधित कार्यालयों को भेजता है।

(ट) राजभाषा गृह मंत्रालय की राजभाषा संबंधी विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं को लागू करना। इसके अलावा हिन्दी के प्रचार–प्रसार के और भी दायित्व है जिनका निर्वहन करना होता है।

उपसंहार

अतः यदि प्रत्येक कर्मचारी राजभाषा हिन्दी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखेगा तो सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग उम्मीद से कहीं अधिक तेजी से अवश्य बढ़ने लगेगा।

नाहर सिंह
सहायक निदेशक (राजभाषा)

कुछ बातें आजमाने की

- टूटे हुए कांच के टुकड़ों को गुंदे हुए आटे के साथ उठाएं, पतले–पतले टुकड़े आराम से उठ जाएंगे, और हाथ में लगने का भी डर नहीं होगा।
- तांबे के बर्तन आदि को इमली के पानी से साफ करें।
- सोने के गहने को सर्फ के पानी से हल्दी डालकर उबालें, चमक जाएंगे।
- प्याज को भूनते समय थोड़ा सा नमक डालने से प्याज जल्दी भुन जाता है।
- कढ़ी में हल्दी ज्यादा पड़ जाए तो सफेद कपड़े ढक कर उबालें तो हल्दी का रंग हल्का हो जाएगा।
- सब्जी में रस ज्यादा हो गया हो तो एक चम्मच कोर्न फ्लोर आधी कटोरी में पानी को अच्छी तरह मिला करके उबालने से रस गाढ़ा हो जाएगा।
- नमकदानी में नमक के साथ दो–तीन काबुली चने डालने से नमक में सीलन नहीं होगी।

आशा भाटिया
चीफ ड्राफ्ट्समैन
डी एन डी/एस डी जी

मन की सोच

अभिमान करना मदिरापान करने के समान है। गौरव की इच्छा करना अच्छी बात है लेकिन किसी का नुकसान करके गौरव प्राप्त करना घोर नरक में जाने के समान है। दूसरों की भलाई करना या उनके भले के बारे में सोचना ही इंसान को अपने–आप में महान बना देता है। अपने भीतर खुशी की उमंग को जागृत करना ही अपार सुख का सागर है। जीवन में जो भी खुशी के पल बिताए हों उन्हें याद रखना, दुःख को दूर करने का बहुत आसान तरीका है। जब भी दुःख आए अपने बारे में सोचो, तुम क्या हो? तुमने कब कहां किसी दूसरे के साथ बुरा किया था या बुरा सोचा था। तुम्हें दुःख क्यों मिला इतना सोचने से ही दुःख धीरे–धीरे मन से समाप्त हो जाएगा। चूंकि मन के हारे हार है मन के जीते जीत, यदि हम मन में कोई बात पकड़ लेते हैं तो वह नफरत, गुस्सा हर रिश्ते में आने लगता है।

मैं दुःखी हूं तो मेरी सहनशक्ति कम हो जाएगी। यदि तुम्हारे मन में किसी के प्रति गुस्सा है और तुम बोल नहीं पा रहे हो, क्योंकि तुम्हें डर है कि बोलने से हमारे रिश्ते पर कोई बुरा असर न हो जाए। सच यह है कि कोई भी बात जो बुरी लगती है उसको दबा कर मत रखो। जब गुस्सा आएगा तो वो सामने आ जाएगी और उसे मनाने के लिए तुम फिर झूठ बोलोगे। जब तक तुम किसी के भी प्रति बुरा सोचते रहोगे तुम्हारा दर्द बढ़ता जाएगा और तुम कभी भी किसी रिश्ते में कामयाब नहीं होगे।

ताकतवर बनो अपनी रक्षा के लिए, दूसरों को डराने के लिए नहीं। गुस्सा करो अपने पर, दूसरों को मत डराओ। शेर की तरह खूंखार बनो चोरों के लिए, गलत आदमी के लिए अपने घर पर नहीं। जो प्यार तुम्हें अपने घर से मिलेगा चाहे वो पत्नी हो, मां हो, बाप हो, भाई हो या अपनी छोटी–बड़ी बहन, वह कहीं और से नहीं मिलेगा। दुनिया में बाहर के लोगों से ठीक ढंग से तभी निभाया जा सकता है, यदि हम अपने घर में प्यार से रहते हैं। मां–बाप ने तुम्हें पाल–पोस कर क्या पाया अगर तुम वृद्धावस्था में उनकी सेवा नहीं कर सकते। मां जो एक संवेदना है, साधना है, भावना है, लोरी है, गीत है, फूलों की सुगन्ध है, मंत्रों का जाप है, मां बिना सृष्टि की कल्पना अधूरी है। पिता जीवन है। धौंस से चलाने वाला अनुशासन है। मां की बिंदी और सुहाग है। इस तरह इन सभी बातों को गहराई से सोचो, मन की सोच की अवहेलना न करें।

कृष्णा कपूर
डी एन डी (एस डी जी)

जीवन में एक मित्र मिल गया तो बहुत है दो अधिक है
और तीन तो मिल ही नहीं सकते

हेनरी एज्म्स

अंतर्मन

जब भी मैंने, सोच को अपनी, औरों जैसा पाया है,
रूक कर अपने अंतर्मन को, फिर दर्पण दिखलाया है।

निर्भय हो, जब सच कहने की हिम्मत नहीं जुटा पाया,
सच्चे दिल से किये पुराने वादे नहीं निभा पाया,
कभी दबावों में आ कर, जब समझौतों का साथ चुना,
या अपनी कमियां ढक कर, झूठे शब्दों का जाल बुना,
जब भी अपने आप से, खुद को धोखा करते पाया है.....
रूक कर अपने अंतर्मन को, फिर दर्पण दिखलाया है।

जब मासूमों की बातों से ऊबा, उनपर झुँझलाया,
ज़िम्मेदारी से घबराकर, जब रिश्तों से उकताया,
बूढ़े होते अपने जब, मुझको कंधों पर भाग लगे,
सुख दुःख में साथी रहने के, वचन सभी बेकार लगे,
जब भी सम्बंधों पर, शंका का बादल मंडराया है.....
रूक कर अपने अंतर्मन को, फिर दर्पण दिखलाया है।

जब भी मैं अपनी भाषा और परिधानों से दूर गया,
संस्कार, मर्यादा और इतिहास के पन्ने भूल गया,
या जब मेरे चिंतन पर उनकी वाणी का वार हुआ,
और मेरी जीवन शैली वर परदेशी प्रहार हुआ,
जब भी अपनी मौलिकता पर खतरा बनता पाया है.....
रूक कर अपने अंतर्मन को, फिर दर्पण दिखलाया है।

जब भी मैंने, सोच को अपनी, औरों जैसा पाया है,
रूक कर अपने अंतर्मन को, फिर दर्पण दिखलाया है।

कैप्टन के एस नूर
निदेशक
नौसेना शिक्षा

हम स्वयं ही अपने शत्रु है, स्वयं ही अपने मित्र हैं

स्वयं के लिए दुख के बीज बोने वाला अपना शत्रु स्वयं है, हम स्वयं के लिए ही दुख के बीज बोते हैं। बीज बोने और फसल काटने में बहुत वक्त लग जाता है, इसलिए हमें याद ही नहीं रहता है कि हमने ही बीज बोए थे। हम सोचते हैं, हम ने बोए थे आम के बीज परन्तु कैसा दुर्भाग्य है, फल नीम के मिल रहे हैं। मुझे जाना है आगरा और मैं हरिद्वार जाने वाली सड़क पर चलता चला जा रहा हूं तो कितना भी सोचूं आगरा जा रहा हूं पर मैं पहुंचूगा तो हरिद्वार ही। सोचने से नहीं, आदमी सही रास्ते पर चलने से सही लक्ष्य पर पहुंचता है फल ही कसौटी है बीज की। बीज आपने कैसे बोए।

हम सभी आनन्द, सुख शांति चाहते हैं जीवन में लेकिन कहां हैं शांति ?

हमारी चाह से फल नहीं आते, हम जो बोते हैं उसी से पाते हैं। बोते जहर हैं, चाहते अमृत हैं। एक आदमी क्रोध के बीज बोए और शांति चाहे, घृणा के बीज बोए और प्रेम चाहे, शत्रुता के बीज बोए और मित्रता चाहे, दूसरों को गालियां दे और औरों से शुभ आशीष चाहे, यह असंभव है। यह इम्पासिबल डिजायर है, मैं गाली दूं और दूसरे मुझे आदर दें यह असंभव कामना हमारे मन में चलती है। चारों ओर हमारी फेंकी हुई ध्वनियां प्रतिध्वनित होकर हमें मिल रही हैं। थोड़ी देर अवश्य लगती है। जब तक लौटती हैं तब तक हमें ख्याल ही नहीं रहता कि जो हम ने गाली फेंकी थी वही वापिस लौटी है। हम खुद को ही धोखा दे रहे होते हैं जो भी हम बो रहे हैं। उसकी फसल हमें काटनी ही पड़ेगी। जगत में कुछ भी बेहिसाब नहीं होता। हम कुछ ऐसा करते हैं कि अपने को ही दुख में डालते हैं। तालाब में कंकड़ फेंको, कितना दूर तक उसके वर्तुल फैल जाते हैं। एक छोटी सी दी हुई गाली से कितने लोगों का अकल्पनीय अहित हो सकता है। आपका ही बोया हुआ बीज दूर–दूर तक फैल जाएगा। कोई भी घटना निष्परिणामी नहीं होती, उसके परिणाम जरूर होंगे। सूक्ष्म तरंगें पैदा होंगी चारों ओर। अपना मित्र वही है जो अपने चारों ओर मंगल का फैलाव करता है, सुख की कामना करता है। शत्रुता को फैला रहे हैं तो शत्रुता ही मिलेगी। मित्रता को फैला रहे हैं तो मित्रता ही मिलेगी। बुद्ध अपने भिक्षुओं से कहते थे कि तुम चौबीस घंटे सजग रहना, राह पर कोई दिखे उसके मंगल की कामना करना, वृक्ष भी मिल जाए उसके पास से गुजरते हुए उसके मंगल की कामना करना। एक भिक्षु ने पूछा इससे क्या फायदा? बुद्ध ने कहा इससे दो फायदे हैं– पहला यह कि तुम्हें गाली देने का अवसर न मिलेगा, जब तुम किसी के लिए मंगल की कामना करते हो तो तुम उसके भीतर की प्रतिध्वनि (Resonance) पैदा करते हो। वह भी तुम्हारे लिए मंगल की कामना से भर जाता है। इसीलिए आजकल भी गांवों में राह चलते हुए अनजान आदमी को भी राम–राम कहने का रिवाज है, सिर्फ इस देश में। उस आदमी को देखकर प्रभु का स्मरण किया, उसके लिए शुभकामनाएं पैदा कीं। वह आदमी चाहे राम को मानता हो न मानता हो लेकिन उत्तर में वह भी राम–राम ही कहेगा। राह में पच्चीस दफा राम–राम कर लेना पड़ता है। जीवन बहुत छोटी–छोटी घटनाओं से निर्मित होता है। मंगल की कामना मात्र से मंगल प्रतिफलित होता है। हम

अपने चारो तरफ अगर पारस का काम करते हैं तो यह असंभव है कि बाकी लोग हमारे लिए पारस न हो जाएं, वे भी हो जाते हैं। अपना मित्र वही है जो अपने चारो ओर मंगल का फैलाव करता है, शुभ की कामना करता है, जो अपने चारो ओर नमन से भरा है, कृतज्ञता से भरा है, जो आदमी दूसरों के लिए मंगल से भरा हो वह अपने लिए अमंगल कैसे कर सकता है। वह अपना मित्र हो जाता है। अपने चारो ओर अमंगल की कामना करना, अहित की कामना करना, दूसरों के अहित की कामना करना, घृणा नफरत फैलाना, शत्रुता फैलाना, स्वयं अपना शत्रु हो जाना है, स्वयं अपने लिए कांटे बोना है, विष के बीज बोना है।

जगदीश बजाज
एस डी ओ–1
डी एन डी (एस एस जी)

किसी आंखों में क्या है

मां की आंखों में	–	ममता
पिता की आंखों में	–	कर्त्तव्य
बहन की आंखों में	–	स्नेह
भाई की आंखों में	–	प्यार
गुरू की आंखों में	–	ज्ञान
सज्जन की आंखों में	–	नम्रता
विद्यार्थी की आंखों में	–	जिज्ञासा
अमीर की आंखों में	–	घमण्ड
गरीब की आंखों में	–	आशा
मित्र की आंखों में	–	सहयोग
दुश्मन की आंखों में	–	प्रतिशोध
वैज्ञानिक की आंखों में	–	खोज
ईश्वर की आंखों में	–	दया
तपस्वी की आंखों में	–	मोक्ष
अंततः प्यार की आंखों में	–	त्याग

श्री कर्णपाल
उ श्रे लि
संभारिकी सहायता निदेशालय

सागर की लहरों में तुम्हारी यादें

एक नवविवाहित नौसैनिक के अंतर्मन की गाथा

लहरों को देखते हैं तो उनकी जुल्फें याद आती हैं।
सिहर जाता है सारा बदन जब उनकी याद आती है।।

जिंदगी है सागर तो मोहब्बत जहाज है।
इंतजार में हमारे कोई कहीं बेकरार है।
देश से बढ़कर कुछ नहीं सागर से पहला प्यार है।
कहते हैं उनसे–इंतजार करो हमारा भी दिल बेकरार है।

लहरों को देखते हैं तो उनकी जुल्फें याद आती हैं।
सिहर जाता है सारा बदन जब उनकी याद आती है।।

याद जब उनकी आती है, लहरों में सूरत देखते हैं।
मगर ख्वाबों को दूर रखकर, हम देश की मूरत देखते हैं।
चाहतें तो दिल की बहुत हैं पर काम जरूरी है।
उनके प्यार से पहले, देश हमारी जरूरत है।

लहरों को देखते हैं तो उनकी जुल्फें याद आती हैं।
सिहर जाता है सारा बदन जब उनकी याद आती है।।

विरह में वह हमारी रहती है मजबूरी नहीं समझती है।
याद हम उन्हें दिलाते हैं सैंया तो तेरे वीर हैं।
गर्व करो हम पर देश की सेवा में लीन हैं।
याद तो तुम्हारी आती है पर लहरों में खो जाती है।

लहरों को देखते हैं तो उनकी जुल्फें याद आती हैं।
सिहर जाता है सारा बदन जब उनकी याद आती है।।

जे के एम शर्मा
सी पी ओ
नौसेनाध्यक्ष सचिवालय

सूर्य से लाभ

1. सूर्य भौतिक अंधकार को दूर करके हमें प्रकाश देता है। हमेशा याद रखो अंधकार मानव का सबसे बड़ा शत्रु है। जहां अंधकार का बसेरा है वहां जीवन में मुसीबत ही मुसीबत है। जहां जीवन में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है, वहां सुख ही सुख है। इसी प्रकार हम सब विशेष तौर पर बुद्धिजीवी वर्ग, अच्छी–अच्छी पुस्तकों का स्वाध्याय करके अपने जीवन में अज्ञान रूपी अंधकार को हटाकर सर्वत्र वेदों का प्रकाश फैलाकर प्राणी मात्र को सुखी बनाने का प्रयत्न करें। अंधकार में हर जीव परेशान होता है, चारों तरफ निराशा छा जाती है। कई बार ऐसा देखने में आया है कि कई दिन तक सूर्य के दर्शन नहीं होते, सर्दी बढ़ जाती है। किसी काम में मन नहीं लगता। खेती में भी भारी हानि होती है। फल वाले वृक्षों के फूल झड़ जाते हैं जिस कारण फल नहीं लगते। पक्षी भी बेचारे इस अंधकार और सर्दी में अपने भोजन की तलाश में नहीं निकल पाते चारों तरफ निराशा फैल जाती है।

2. सूर्य देव नियमित रूप से दृढ़तापूर्वक अपने सन्मार्ग पर निर्बाध गति से आगे बढ़ते चलते हैं, चाहे आकाश में बादल हो चाहे वर्षा अपना ताण्डव दिखा रही हो। वह हर समय हर स्थिति में आगे बढ़ते रहेंगे। ऐसा कभी नहीं देखा गया कि सूर्य अपनी गति से रूक गया हो। जिस दिन ऐसा हो जाएगा उस दिन प्रलय हो जाएगी। सूर्य देव से शिक्षा ग्रहण कर हम सब इसी प्रकार दृढ़ता पूर्वक वेद ज्ञान रूपी सन्मार्ग पर बढ़ते रहें। चाहे हमारे मार्ग में कितनी ही बाधाएं आएं मगर हम दृढ़ निश्चय करके उत्साह एवं बलपूर्वक खड़े होकर सब बाधाओं को हंस कर पार करते हुए नियमित रूप से सूर्य देव की भांति आगे बढ़ते चलें।

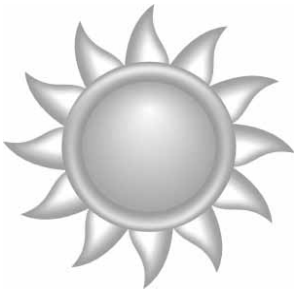

3. सूर्य देव की कृपा से ही हिमालय जैसे पर्वतों पर जमी बर्फ पिघलकर पानी के रूप में नदियों में आती रहती है। जिससे उन नदियों में सारा साल पानी रहता है। हमारा प्यारा भारतवर्ष कृषि प्रधान देश है। कृषि जल के बिना असंभव है। जब नदियों से नहरें निकाल कर स्थान–स्थान पर पानी पहुंचाया जाता है, उनकी सिंचाई से खेती लहलहा उठती है। हर प्राणी का मन प्रसन्न होता है। सबको अन्न खाने को मिलता है। अन्न के अतिरिक्त दालें, तेल निकालने वाले बीज (सरसों, तिल आदि), कपड़ा बनाने वाली कपास, पशुओं को पेट भरने हेतु चारा, भिन्न–भिन्न प्रकार के मिष्ठान बनाने के लिए गन्ना उत्पन्न होता है। जिससे शक्कर, बूरा चीनी और गुड़ आदि कई वस्तुएं बनाई जाती हैं। पशुओं से घी, दूध, दही आदि प्राप्त होता है। अभिप्राय यह है कि जीवन निर्वाह के लिए हर वस्तु खेती पर निर्भर करती है।

4. सूर्य देव वर्षा करने में सहायक है। जब सूर्य की किरणें तेजी से चमकती हैं तो समुद्र का पानी भाप बनकर उड़ता है। जिससे वर्षा होती है, वर्षा होने पर गर्मी शांत होती है हर

प्राणी को प्रसन्नता अनुभव होती है। वर्षा खेती में सहायक है। वर्षा का जल बांध में रोककर बिजली उत्पन्न की जाती है। वर्षा होने पर सर्वत्र हरियाली छा जाती है। वनों में नए–नए पौधे उत्पन्न होते हैं जो बाद में पेड़ों का रूप ले लेते हैं। यह सब सूर्य की अपार कृपा से ही संभव है।

5. सूर्य देव जब उदय होते हैं तब सब प्राणी प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। हर प्राणी अपने कार्य में जुट जाता है। सूर्यदेव हर प्राणी को सुख प्रदान करते हैं। व्यक्ति सारा दिन अथक परिश्रम करके अपना जीवन निर्वाह करता है। रात्रि को थका–हारा प्राणी निद्रा की गोद में चला जाता है। निद्रा सारी थकान दूर कर उसे दूसरे दिन के लिए तरोताजा बना देती है। सूर्य देव के उदय होते ही पूर्णतः सभी फिर अपनी–अपनी दिनचर्या में जुट जाते हैं।

6. सूर्य देव हमें ऊष्मा प्रदान करते हैं। ऊष्मा से प्राणी मात्र का जीवन चलता है। जिस प्राणी के शरीर में गर्मी समाप्त हो जाती है, उसका जीवन समाप्त हो जाता है। सूर्य की ऊष्मा से ही खेती पकती है। इसी ऊष्मा से फलादि में पकास आता है। इसी ऊष्मा से प्रकृति फलती फूलती है। छोटा नन्हा पौधा बड़ा वृक्ष बन जाता है। सूर्य देव की गर्मी के बिना स्थान–स्थान पर जहरीले कीड़े उत्पन्न हो जाते हैं। जो प्राणी मात्र को बहुत हानि पहुंचाते हैं। ऊष्मा के बिना स्थान–स्थान पर सीलन के कारण सड़ांध उत्पन्न हो जाती है जिसे सूर्य देव अपनी तीक्ष्ण किरणें डालकर समाप्त करते हैं। आजकल तो सूर्य की इस गर्मी से बिजली बनाई जाने लगी है, जिससे भोजन बनाना, पंखें चलाना, घरों में रोशनी करना आदि कार्य संभव है।

7. सूर्यदेव अपनी तीक्ष्ण किरणों से वायु को शुद्ध करते हैं। वृक्ष भी सूर्य के प्रकाश में ऑक्सीजन बनाकर छोड़ते हैं। ऑक्सीजन हर प्राणी के लिए अति आवश्यक है, ऑक्सीजन से ही हम सांस लेते हैं जिससे हमारे प्राणों की गति चलती रहती है। वायु में कई प्रकार के कीड़े पैदा हो जाते हैं, जो सूर्यदेव की तीक्ष्ण किरणों के द्वारा नष्ट हो जाते है और वायु शुद्ध होकर बहने लगती है। शुद्ध वायु में श्वास लेने से सब के जीवन की रक्षा होती है। पेड़, पौधे, कीट, पतंगे, मानव अर्थात सब प्राणधारियों के जीवन की रक्षा के लिए शुद्ध वायु का बहना अत्यधिक आवश्यक है।

सूर्यदेव ही चन्द्रमा को प्रकाश प्रदान करते हैं। वह सूर्य से प्रकाश ग्रहण करके पृथ्वी पर अपनी चांदनी बरसाते हैं। चन्द्रमा की चांदनी शीतल व मधुर होती हैं, जब चन्द्रमा पृथ्वी पर अपनी शीतल चांदनी को फैलाता है तो सारा जगत शीतलता से भरकर आनन्दमय हो जाता है। मधुर व शीतल चांदनी पृथ्वी पर आकर सर्वत्र सुख की वर्षा करती है। हर प्राणी इससे सुख का अनुभव करता है।

अतः सूर्य से ही हमारे जीवन की हर आवश्यकता जुड़ी हुई है। सूर्य हमें जीवन देता है।

कमाण्डर विजय कृष्ण कौशिक
संयुक्त निदेशक
डो ओ डी वाई

श्रम का मूल्य

एक माली के चार पुत्र थे और चारों आलसी थे। वृद्ध पिता ने चारों पुत्रों को एक सबक सिखाना चाहा। मरते समय वृद्ध ने अपने चारों पुत्रों को पास बुलाकर कहा कि मेहनत की रोटी खाना, लेकिन यदि तुम्हें कभी पैसे की आवश्यकता हुई तो बगीचे में पेड़ों के नीचे मैंने जो बहुत सारा धन गाड़कर रखा है, उसे निकाल लेना।

पिता की मृत्यु के बाद कुछ वर्षों तक पुत्रों ने हाथ का सारा पैसा खर्च कर डाला। पर आलसीपन के कारण आम के पौधों को पानी तक नहीं सींचा। नतीजा यह हुआ कि सारे पेड़ सूख गए और उनमें फल भी नहीं लगे।

अंत में पिता की बात याद करके उन चारों पुत्रों ने अपनी–अपनी पत्नियों सहित सारा खेत खोद डाला, पर कहीं भी गड़ा धन नहीं मिला। एक हफ्ते में खूब वर्षा हुई और सारा खेत पानी से लबालब भर गया। एक ही महीने में सारे आम के पेड़ हरे हो गए और उनमें खूब फल–फूल निकल आए। पकने पर फलों की बिक्री से चारों को खूब पैसा मिला और सारा कर्ज चुकाकर उन्हें एक साल तक आराम से रोटी खाने भर को पैसा बचा रहा। अब वे मेहनत के अधीन भी हो गए। उनके मृत पिता का मित्र गांव का मुखिया था और उसने चारों पुत्रों को बुलाकर पूछा, बच्चों अब तुम्हें मालूम हो गया कि धन कहां छिपा है।

शिक्षा–श्रम ही सच्चा धन है। जो धरती माता की पूजा करता है, माता अपने बच्चों पर कृपा की वर्षा करती है।

सावित्री पारचा
अनुभाग अधिकारी
निदेशालय विद्युत यांत्रिक
डी ई ई

किसको कैसे जीते

मित्र को	–	सरल व्यवहार से
शत्रु को	–	युक्ति से
लोभी को	–	लाभ से
स्वामी को	–	कार्य से
विद्वान को	–	आदर से
बन्धुओं को	–	समानता से
क्रोधी को	–	विनय से
गुरू को	–	अभिवादन से
कंजूस को	–	धन से
झूठ को	–	सत्य से
तृष्णा को	–	संतोष से
निर्दयी को	–	दया से
भगवान को	–	भक्ति से
मन को	–	वशीकरण से

खून देंगे माटी नहीं

जब जनाजा उठा एक शहीद का, काफिला यूं बनने लगा।
नीर आंखों में भरे, हर युवा व्यथित होने लगा।।
जानता था न जिसको, ये मोहल्ला ये जहां।
आज शामिल है ये बस्ती, मेला सा यूं लगा वहां।।
सिसक–सिसक कर रोती माता, अश्रु नहीं रूक पाते हैं।
खुशियों के देखे दिवा स्वप्न, द्रवित आंखों में रह जाते हैं।।
मर्म वेदना उठती मन में, क्यूं आंखों में तम सा छाता है।
रहती न जीने की आशा जब, चिराग अपना बुझ जाता है।।
तीन रंगों में लिपटा तन, क्यूं आज इतना खास है?
मातृ–भूमि हित मरना अच्छा, होता ये आभास है।
जिसने सुलाकर खुद को, देश का परचम लहरा दिया।
जिसने जलाकर खुद को, आजादी का दीपक जला दिया।।
हाथ नमन करने को उठते, ऐसे युवा महान को।
इतिहास में अंकित कर गया, जो अपने नाम को।।
माटी में जन्मा वीर, माटी में ही दफन हो जाएगा।
सोचता हूं ? क्या शहीदों का अध्याय पूर्ण हो जाएगा ?
नहीं–नहीं बिल्कुल नहीं, न अध्याय पूर्ण हो पाएगा।
बलि वेदी की रक्त क्षुधा, अब युवा वर्ग मिटाएगा।।
बलिदान हित जो पथ है बना, वो रिक्त नहीं हो पाएगा।
प्रज्वलित हुआ जो दीप यहां, कदापि नहीं बुझ पाएगा।
सौगंध उठाते आज वतन की, थाती को यूं ही निभाएंगे।
खून देंगे माटी नहीं, चाहे खाक में मिल जाएंगे।।

निशानाथ दीक्षित
ई एम पी–1
डी एल एस

उन्नति चाहो तो विनम्र बनो

अनेक विद्यालयों के सूचनापट्ट पर ये शास्त्र वचन लिखे होते हैंः

विद्या ददाति विनयम, विद्या विनयेन् शोभते।

अर्थात विद्या विनय प्रदान करती है और वह विनय से ही शोभित होती है।

वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति जीवन रूपी पाठशाला का विद्यार्थी ही है और वह सतत इस पाठशाला में कुछ न कुछ सीखता ही रहता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को इस शास्त्र वचन का आदर करना चाहिए और उसे वास्तविक विद्या प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए जो विनय प्रदान करे और जीवन में अर्जित ज्ञान को सुशोभित करे।

अहंकारी व्यक्ति कितना भी विद्यावान हो वह शोभा नहीं पाता। इसलिए वेद भी हमें आज्ञा करते हैं।

"पर्णातलघीयसी भव"

हे मानव तू पत्ते से भी हलका बन अर्थात नम्र बन। (अथर्ववेदः 10.1.29)

हमारा सबका अनुभव है कि जो नम्र बनता है वह सभी का खास हो जाता है क्योंकि नम्रता एक ऐसा गुण है जो अन्य अनेक सदगुणों और सम्पदाओं को खींच लाता है।

सुशीलो भव धर्मात्मा मैत्रः प्राणिहिते रतः।

निम्नं यथापः प्रवणाः पात्रमायान्ति सम्पदः।।

हे मनुष्य! तू सुशील पुण्यात्मा, प्रेमी और समस्त प्राणियों का हितैषी बन। क्योंकि जैसे नीची भूमि की ओर लुढ़कता हुआ जल अपने–आप ही पात्र में आ जाता है। वैसे ही सत्पात्र, विनम्र मनुष्य के पास समस्त सम्पत्तियां स्वयं आ जाती हैं। (विष्णु पुराण 1.11.24)

भारतवर्ष के सम्राट राजा भतृहरि ने जब आत्मविद्या को पूर्ण रूप से आत्मसात किया और आत्मानंद में निमग्न हुए, तब उन्होंने लिखा।

"गूढ़ जान्यो आपको, हरयो भरम ताप को"

मुझ बेवकूफ को पता ही नहीं था कि मैं बड़ा बेवकूफ था। अब भ्रम और ताप को मैंने मिटा दिया है। आत्मविद्या कितनी निरहंकारिता, कितनी विनम्रता प्रदान करती है। सरल, निष्कपट, वास्तविक विनम्रता तो सीधे–अनसीधे अध्यात्म विद्या का ही प्रसाद है।

समुद्र में अनेक नदियां आकर मिलती हैं परन्तु वह शांत रहता है। उसमें बाढ़ नहीं आती। आप भी गंभीर और विनम्र बनो। विद्या, धन, वैभव, उच्च पदवी, मान और सम्मान पाकर फूल मत जाओ। अपनी मर्यादा से बाहर मत जाओ जो वृक्ष फलों से लद जाता है, वह झुक जाता है। ऐसे ही जो व्यक्ति सच्ची विद्या पा लेता है वह विनम्र हो ही जाता है। जो गागर नल के नीचे झुकने को तैयार होती है, वहीं जल से पूर्ण हो जाती है। विनम्रता से विद्या मिलती है और विद्या से पुनः विनम्रता पोषित होती है। यह नियम है। जो विनम्र है उसे न किसी से भय होता है और न पतन की चिन्ता। जो विनम्र है उसका सर्वत्र आदर होता है। जो अभिमानी होता है उसका सर्वत्र तिरस्कार होता है। जिसके पेट में अभिमान की हवा भरी हुई है उसको फुटबॉल की तरह ठोकरें ही खानी पड़ती हैं। विनम्र व्यक्ति लोगों से आदर सत्कार पाता है।

सुशीला शर्मा
सहायक निदेशक (रा भा)
डी एन ई

मंजिल को पाना है

हर कदम है मुश्किल भरा पर बढ़ते तो जाना है
दुश्मनों से टकराते हुए मंजिल को अपनी पाना है

राहें तो हैं मुश्किल दोस्तों डगर नहीं है आसान
देश के लिए मर मिटना यह भी तो है आन
जीवन को अपने समर्पित कर रखो अपना मान
याद रहेगी कुर्बानी भले ही गुम हो जाए नाम
हर कदम है मुश्किल भरा पर बढ़ते तो जाना है
दुश्मनों से टकराते हुए मंजिल को अपनी पाना है

जंग से क्या डरना हमें हिम्मत से आगे है बढ़ना
आए कितनी भी मुश्किलें पीछे नहीं है हटना
जीत होगी तुम्हारी वादों से ना अपने मुकरना
देश की आन है सबसे बड़ी बस यही याद रखना

हर कदम है मुश्किल भरा पर बढ़ते तो जाना है
दुश्मनों से टकराते हुए मंजिल को अपनी पाना है

माना जीने की चाहत है पर मरने से क्या डरना
बांध लो कफन सर पर जिंदगी नाम कर दो देश के
जिंदगी जो काम न आए अपने ही वतन के
उस जिंदगी को आखिर दोस्तो क्यों है जीना

हर कदम है मुश्किल भरा पर बढ़ते तो जाना है
दुश्मनों से टकराते हुए मंजिल को अपनी पाना है

जे के एम शर्मा
सी पी ओ
नौसेनाध्यक्ष सचिवालय

संस्कार का महत्व

ईमानदारी, निर्लोभ, सादगी, सत्यता, परोपकार, सहायता, सेवा, सम्मान, सदाचार, ये शब्द मात्र शब्दकोश में ही क्यों रह गए हैं? संस्कार, संस्कृति, नैतिकता, जीवन मूल्य कहां खो गए?

आज बच्चा गर्दन हिलाता है, स्माइल देता है, पर हाथ नहीं जोड़ता, पैर नहीं छूता, प्रणाम नहीं करता। आर्शीवाद क्या है, उसे नहीं पता।

दीपावली में लक्ष्मी पूजन के पश्चात, हम अम्मा–बाबूजी के पैर छूते थे, इसी प्रकार होली की शाम को, अपने जन्मदिन पर तिलक करने के पश्चात हम अम्मा–बाबूजी तथा अपने बड़ों के पैर छूते थे, झोली भरकर आर्शीवाद मिलता था।

आज केक काटने के बाद तालियां बजती हैं, हाथ मिलाए जाते हैं, पर सिर पर आर्शीवाद का हाथ नहीं रखा जाता। जीवन की दौड़ में बहुत कुछ पाने की होड़ में शायद बहुत कुछ पाया भी है। फाइलों में डिग्री, कार्यालय में पद, आकाश में उड़ने से लेकर, धरती पर रेंगने वाले वाहन, जिन्होंने आज के मानव के जीवन को तीव्र गति प्रदान की है। आधुनिक मशीनी युग में विभिन्न प्रकार के उपकरण, लैपटॉप, मोबाइल, गहने, शेयर, लॉकर, फ्लैट, चांद पर बसने की तमन्ना और भी बहुत कुछ। परन्तु बहुत कुछ खोया भी है। प्रातःकाल प्रत्येक घर में ईश्वर की आराधना, सुबह की आरती, जन्मदिन पर मिला पांच रूपए का नोट, दादी की मिश्री, नानी के लड्डू, मौसी की साड़ी ..... वगैरह। वह सब छिन–सा गया है।

नई पीढ़ी को संस्कारित करना हमारा कर्तव्य है और समय की आवश्यकता है। स्कूल की प्रार्थना में नैतिकता व संस्कारिक शिक्षा के लिए पांच मिनट जोड़े जा सकते हैं। बच्चों के जन्मदिन पर ललाट पर तिलक किया जा सकता है।

आर एस भण्डारी
यू डी सी
डी एफ एम निदेशालय

एक चीज

जीतने के लिए यदि कोई चीज है तो ..... प्रेम
पीने के लिए यदि कोई चीज है तो ..... क्रोध
खाने के लिए यदि कोई चीज है तो ..... गम
देने के लिए यदि कोई चीज है तो ..... दान
दिखाने के लिए यदि कोई चीज है तो ..... दया
लेने के लिए यदि कोई चीज है तो ..... ज्ञान
कहने के लिए यदि कोई चीज है तो ..... सत्य
रखने के लिए यदि कोई चीज है तो ..... इज्ज़त
फेंकने के लिए यदि कोई चीज है तो ..... ईर्ष्या
छोड़ने के लिए यदि कोई चीज है तो ..... मोह

नरेन्द्र कुमार जोशी
एस ओ(डी ओ)
डी एन डी (एस एस जी)

अहंकार

किस बात का अहंकार है, किस बात का है ये गुमान
भूल जाएं सुन्दर काया, जीवन को तू सपना मान।

देखो आज के मानव को, अहंकारी होता जा रहा,
भूलकर कर्त्तव्य–परायणता को, धन बढ़ाता जा रहा।

है जो घमण्ड तुझको, इस सुन्दर तन और धन पर आज,
धूल में मिल जाएगा सब, जब होंगे ईश्वर नाराज।

अपनी मैं मेरी में तू, सब कुछ है भुला बैठा,
सर्वशक्तिमान नहीं है तू, क्यों फिरता ऐंठा–ऐंठा।

एक सुन्दर जीवन पाया था तूने जन्म–जन्म की तपस्या से,
कर दिया बरबाद इसको अहंकार और हिंसा से।

अपने इस अहंकार से, कितना किसे सता पाएगा,
मत भूल पगले तू भी, एक दिन मारा जाएगा।

कर ले सुकर्म मौका मिला है, पश्चाताप अब करने का,
दुष्टता की बेड़ियों से, तुझे है पार निकलने का।

अच्छा कर्म संभव तब होगा, जब अहंकार तू त्याग देगा,
इंसान को इंसान समझेगा, इंसानियत को प्यार देगा।

हमदर्द बन जा दुःखी प्राणी का, सोच जरा "ए" नादान,
तेरे अहंकार की बदौलत, दुःखी हैं कितने इंसान।

किस बात का अहंकार है, किस बात का है ये गुमान
भूल जाएं सुन्दर काया, जीवन को तू सपना मान।

कमांडर विजयकृष्ण कौशिक
जे डो डी (निदेशक डॉकयार्ड)